प्रातः क्लास पिताश्री ओमशान्ति मधुबन 27-7-67

रिकार्ड:-भोले नाथ से निराला — ओमशान्ति। मीठे2 बच्चे यह जानते हैं कि भोलानाथ किसको कहा जाता है। तुम संगम युगी ब्राह्मण ही जानते हो। कलियुगी मनुष्य बिल्कुल भी नहीं जानते। ज्ञान का सागर एक बाप ही है। वह ही सृष्टि के आद मध्य अंत का ज्ञान समझाते हैं। अपनी पहचान देते हैं। तुम बच्चे अभी समझते हो। आगे कुछ नहीं जानते थे। साधु संत आद कुछ नहीं जानते। कहते हैं हम रचता और रचना को नहीं जानते। तो उनको क्या कहेंगे। न जानने वाले नास्तिक। बाप को न जानने कारण और ही ग्लानी करते रहते। बाप कहते हैं मैं ही आये भारत को स्वर्ग बनाता हूं। बेहद का वर्सा देता हूं। जो तुम अभी ले रहे हो। जानते हो बेहद के बाप से हम बेहद का सुख का वर्सा ले रहे हैं। यह भी बना बनाया ड्रामा है। एक भी एक्टर न एड हो सकता न कम हो सकता है। सभी को अपना2 पार्ट मिला हुआ है। मोक्ष कब पाये नहीं सकते। जो जो जिस धर्म का है फिर उसी ही धर्म में जाने वाला है। कृश्चन्स आद वा बौधी आद इच्छा करें हम स्वर्ग में जावें परन्तु जायें नहीं सकते। जब उनका धर्म स्थापक आता है तब ही उनका पार्ट है। यह तुम बच्चों की बुधि में है। सारी दुनिया के मनुष्य मात्र इस समय नास्तिक हैं। अर्थात बेहद के बाप को न जानने वाले। मनुष्य ही जानेंगे ना। यह नाटकशाला मनुष्यों की ही है। हरेक आत्मा निर्वाण धाम से आती है पार्ट बजाने। फिर पुरुषार्थ करते हैं निर्वाण धाम जाने। कहते हैं बुध निर्वाण गया। अब बुध का शरीर तो नहीं गया ना। आत्मा गई। परन्तु बाप समझाते हैं जाता कोई नहीं है। नाटक से निकल ही नहीं सकते। मोक्ष पाये ही नहीं सकते। बना बनाया ड्रामा है। कोई मनुष्य समझते हैं मोक्ष मिलता है इसके लिए पुरुषार्थ करते रहते। जैसे जैनी लोग पुरुषार्थ करते रहते हैं। उनकी अपनी रसम रिवाज है। उनका अपना गुरु है। जिनको मानते हैं। बाकि मोक्ष किसको मिलता नहीं। तुम जानते हो हम पार्ट धारी हैं इस ड्रामा में। हम कब आये फिर कैसे जावेंगे यह किसको मालूम नहीं है। जनावर तो नहीं जानेंगे ना। मनुष्य फिर कहते हैं हम एक्टर्स पार्ट धारी हैं। यह कर्मक्षेत्र है। जहां आत्मायें रहती हैं, उनको कर्मक्षेत्र नहीं कहा जाता वह तो निराकारी दुनिया है। उस में कोई खेल पाल नहीं, ऐक्ट नहीं। फिर निराकारी दुनिया से साकारी दुनिया में आते हैं पार्ट बजाने। जो फिर रिपीट होता रहता है। प्रलय कब होती नहीं। यह कहाँ से निकाला कि प्रलय होती है शास्त्रों से। दिखाते हैं महा भारत लड़ाई में यादव और कौरव मर गये। बाकि कुछ रहा नहीं। इस से समझते हैं प्रलय हो गई। यह सब बातें बैठ बनाई हैं। फिर दिखाते हैं समुद्र में पिपर के पते पर एक बच्चा अंगूठा चूसते आया। अब उन से फिर सृष्टि कैसे पैदा होगी। मनुष्य तो जो कुछ सुनते हैं सत सत करते रहते हैं। प्राणा हवा से पैदा हुआ सत। समझते हैं व्यास भगवान ने शास्त्र बनाई उस में झूठ थोड़े ही हो सकती। अभी तुम बच्चे जानते हो कि शास्त्रों में क्या है। यह सब है भक्ति दुर्गति मार्ग के शास्त्र। भक्तों को फल देने वाला भगवान बाप ही है। कोई मुक्ति में, कोई जीवन मुक्ति में चले जावेंगे। हरेक पार्ट धारी आत्मा का जब पार्ट आवेगा तब फिर आवेंगे। यह ड्रामा का राज सिवाय तुम बच्चों के और कोई नहीं जानते। कहते हैं हम रचता और रचना को नहीं जानते। ड्रामा के ऐक्टर्स होकर और ड्रामा के आद मध्य अंत डियुरेशन को न जाने तो एडियट कहेंगे ना। बाप को नहीं जानते तो नास्तिक ठहरे। इस समय के मनुष्यों को जनावर से भी बदतर कहा जाता है। मनुष्य एक्टर होते हुए, समझते हुए कि हमारी आत्मा पार्ट बजाने आती है, फिर भी अगर ड्रामा के आद मध्य अंत को न जाने तो जनावर से भी बदतर ठहरे ना। बिलकुल ही पत्थर बुधि हो जाते। समझाने से भी समझते नहीं। इस समय भारत पत्थर बुधि है। जो अपने बेहद का बाप रचता और रचना जिस में एक्ट करते हैं उनको बिलकुल जानते नहीं। तुम भी नहीं जानते थे। इतने सभी मनुष्य 84 लाख जन्म कैसे लेंगे। 84 लाख समझने कारण डियुरेशन भी लाखों वर्ष दे दी है। अभी तुम कहते हो बाबा हम आप से

कल्प कल्प आकर मिलते हैं। 5000 वर्ष पहले भी आप -- से मिले थे बेहद का वर्सा लेने।यथा राजा रानी तथा प्रजा सब विश्व का मालिक बनते हैं।प्रजा भी कहेंगी हम विश्व का मालिक हैं।तुम जब विश्व के मालिक बनते हो उस समय चंद्र वंशीराज्य नहीं होता है।तुम बच्चे सारी ड्रामा के आद मध्य अंत को जानते हो। मनुष्य भक्ति मार्ग में जिसकी पूजा करते हैं उनको भी जानते नहीं।जिसकी भक्ति करनी होती है तो उनकी बायोग्राफी को भी जानना चाहिए ना।एक भी मनुष्य नहीं जो शिव की बायोग्राफी को जानता हो।तुम बच्चे जानते हो बाप के द्वारा।तुम बाप के बने हो।बाप की बायोग्राफी का पता है।वह बाप है पतित पावन। लिबरेटर ,गाईड।तुमको कहते हैं पाण्डव।गाइड कहने से एक गाइड हो जाता।पण्डे कहते हैं तो बहुत गाइडस हो जाते।तुम सभी के गाइड बनते हो।रास्ता बताने लिए।अंधों की लाठी बनते हो। यथा बाप गाइड पण्डा तथा तुम बच्चों को भी बनना है।सब को रास्ता बताना पड़े।तुम आत्मा वह परमात्मा है।उनसे बेहद का वर्सा मिलता है। भारत को बेहद का राज्य था। अब नहीं है।तुम बच्चे अब जानते हो हम बेहद के बाप से बेहद सुख का राज्य लेते हैं।अर्थात मनुष्य से देवता बनते हैं।हम ही देवताएं थे फिर 84 जन्म भोग शुद्र बने हैं।शुद्र को क्षुद्र बुधि कमजात कहा जाता है।सब मनुष्य मात्र इस समय क्षुद्र बुधी हैं।बाप ने आकर ब्राहमण बनाया है।यज्ञ में ब्राहमण जरूर चाहिए।यह है ज्ञान यज्ञ। भारत में यज्ञ बहुत रचते हैं।इसमें खास आर्यसमाजी बहुत यज्ञ रचते हैं।अब यह तो है रुद्र ज्ञान यज्ञ। जिसमें सारी पुरानी दुनिया स्वाहा हो जानी है।अब बुधि से काम लेना पड़ता है।कलियुग में तो बहुत मनुष्य हैं। इतनी सारी पुरानी दुनिया खलास हो जावेगी।कोई भी चीज काम में न आनी है।सतयुग में तो फिर सब कुछ नया होगा।यहां तो कितना गंद है। मनुष्य कैसे गंदे रहते हैं।धनवान बड़े अच्छे महलों में रहते हैं।गरीब तो विचारे गंद में झोपड़ियों में पड़े हैं। अब उन झोपड़ियों को डिसट्राय करते रहते हैं। उन्हों को दूसरी जगह देकर वह जमीन फिर बिकते रहते हैं।नहीं तो वह जमीन प्रापरटी उन गरीबों के है। उनको पैसा मिलना चाहिए।तो विचारे शाहुकार हो जायें।परन्तु बनने न देते।ठगते बहुत हैं।नहीं उठाते तो युक्ति से आग लगाये देते हैं।सब को लूटती रहती है। इन से गवर्मेन्ट को धन बहुत मिलता है। मनुष्य दुखी बहुत हैं। जो सुखी हैं वह भी स्थाई सुख नहीं। अगर सुख होता तो सन्यासि जिनको गुरू बनाते हैं वह क्यों कहे कि यह काग विष्टा समान सुख है।नारी नर्क का द्वार है।तुम्हारे पास चौपड़ी भी है।वह है शंकराचार्य, यह है शिवाचार्य। शिव भगवानुवाच, हम इन माताओं के द्वारा स्वर्ग के द्वार खोल रहे हैं। माताओं पर कलश रखते हैं।फिर वह सब को ज्ञानामृत पिलाती है।परन्तु तुम्हार है प्रवृति मार्ग।दोनो को पवित्र बनाते हैं। तुम हो सच्चे2 ब्राहमण।वह हैं झूठे ब्राहमण।वह हथियाला बांध काम चिता पर बिठाते हैं।तुम वह हथियाला तोड़ दोनों को ज्ञान चिता पर बिठाते हो।अभी है अपवित्र असुर , आसुरी सम्प्रदाय। तुम अभी बनते हो दैवी सम्प्रदाय। आसुरी सम्प्रदाय अर्थात रावण राज्य।गांधी भी कहते थे राम राज्य हो। परन्तु अपन को कोई राक्षस मानते थोड़े ही हैं। बुलाते हैं हे पतित पावन आओ।परन्तु अपन को पतित समझते थोड़े ही हैं।सन्यासि भी गाते हैं पतित पावन—अब वह तो पतित पावन हो न सके।क्या वह पतितपावन ठहरे?क्या गीता सुनाने वाला कृष्ण पतितपावन ठहरे?क्या शिव बाबा?क्या पानी की गंगा? मनुष्यों को तो कुछ भी समझ में नहीं आता।बाप बच्चों को सुजाग करते हैं।तुम घोर अंधियारे में थे। भक्ति है अंधियारा, ज्ञान है सोझरा। तुम सन्यासियों को भी पकड़ सकते हो।कुम्भ के मेले में कितने मनुष्य जाते हैं।सब के गुरू लोग जाते हैं। वह भी पतित पावनी गंगा कहते हैं। तब तो ले जाते हैं।गंगा स्नान से समझते हैं पावन बन जावेंगे। ऐसे ही गंगा में हरद्वार के सारे शहर का कचड़ा जाए पड़ता है। कहां फिर वह कचडा सारा खेती में ले जाते हैं।खाद के लिए वह खान बहुत अच्छा होता है।खेतियों के लिए ।फिर भी मनुष्यों की खाद पड़ती है ना।सतयुग में ऐसे काम होते नहीं।वहां तो अनाज

टेर का ढेर रहता है।पैसा थोड़े ही खर्च करना पड़ता है। बाबा छोटेपन में अनाज भी बेचता था।अनुभवी है ना। गांव का छोड़ा था। कृष्ण तो वैकुण्ठ का मालिक, उनको गांव का छोड़ा कैसे कहेंगे। हां वह ही 84जन्म बाद फिर गांव का छोड़ा बना है।सतयुग में बहुत थोड़े मनुष्य, हर चीज की सस्ताई रहती है। तो बाप बच्चे अब तुमको पतित से पावन बनना है।युक्ति बहुत सहज बताते हैं। अपन को आत्मा समझ बाप को याद करो। आत्मा में ही खाद पडने से तुम मलभी के बन गये हो। वो पारस बुधि थे।अभी है पत्थर बुधि तुम बच्चे जानते हो हम अभी पत्थरनाथ से पारसनाथ बनने आये हैं। बेहद का बाप हमको विश्व का मालिक बनाते हैं। सो भी गोलडेन एजेड विश्व।यह है आयरन एजेड विश्व। बाप बैठ बच्चों को पारसपुरी का मालिक बनाते हैं।तुम जानते हो यहां के इतने महल माड़ियां आदि कोई काम न आवेंगे।खतम हो जावेंगे। वहां क्या रखा है। अमेरिका पास कितना सोना होगा।जो भी बड़े2 हैं सोने पर डांस करते हैं।यही तो थोड़ा बहुत सोना जो माताओं पास है वह भी लेते रहते हैं। क्योंकि उन्हों को कर्ज सोना देना है। तुम्हारे पास वहां सोना ही सोना होता है। यहां कौड़ियां वहां मुहरें होंगी।यहां तो सोने का नाम नहीं हैं। इनको कहा जाता है आयरन एज।भारत ही गोल्डेन एजेड था।अभी भारत ही आयरन एज में है।भारत खण्ड की ही बहुत महिमा है। भारत अविनाशी खण्ड है। कब विनाश नहीं होता। भारत है सबसे उंच ते उंच। तुम मातायें सारी विश्व का उधार करती हो। तुम्हारे लिए जरूर नई दुनिया चाहिए।पुरानी का विनाश चाहिए। कितनी समझने की बातें हैं। शरीर निर्वाह अर्थ धंधा आदि भी करना है। छोड़ना कुछ नहीं हैं। बाप कहते हैं सब कुछ करते मुझे याद करते रहो।भक्ति मार्ग में भी तुम माशूक को याद करते आये हो कि आकर हमको सांवरा से गोरा बनाओ।उनको मुसाफिर कहा जाता है।तुम भी मुसाफिर हो ना। तुम्हारा घर वह है, जहां सब आत्मायें रहती हैं। तुम सभी को ज्ञान चिता पर बिठाते हो।सब हिसाब किताब चुक्तु कर बाप से जाने वाले हैं। फिर नई सिरे तुम आवेंगे। जितना याद में रहेंगे उतना पवित्र बनेंगे और उंच पद पावें। माताओं को तो फुर्सत रहती है।भक्ति की बुधि धंधे आदि तरफ चक्र लगाती रहती है। इस लिए बाबा ने कलश भी माताओं पर रखा है। यहां तो कहते स्त्री को कि पति ही तुम्हारा गुरु, ईश्वर सब कुछ है। तुम उनकी दासी हो। पिछाड़ी में पूंछ लटकता जावेगा।अभी फिर बाप तुम माताओं को कितना उंच बनाते हैं। तुम नारियां ही भारत का उधार करती हो। तुम श्रीमत पर स्वर्ग के द्वार खोलते हो।पुरुष अथवा स्त्री दोनों को सुजाग करते हैं। पाबा से पूछते हैं आवागमन से छूट सकते हैं। बाबा कहते हां कुछ समय। तुम बच्चे तो अलराउण्ड आदि से अंत तक पार्ट बजाते हो। दूसरे जो है वह मुक्ति धाम में रहते हैं। उनका पार्ट ही थोड़ा है।वह स्वर्ग में तो आने वाले नहीं हैं।पार्ट ही बहुत थोड़ा है। आवागमन से मोक्ष इसको कहेंगे। जो पिछाड़ी को आये और यह गये।ज्ञान आदि तो सुन सके। न सुनते हैजो पहले से पिछाड़ी तक पार्ट बजाते हैं। कोई कहे हमको यही पसंद है वहां बैठे रहें।ऐसे थोड़े ही हो सकता है। ड्रामा में बंधा हुआ है।जाके पिछाड़ी में आते हैं।वे बाकि समय शांति धाम में रहते हैं। यह बेहद का ड्रामा है। अच्छा। बाप दादा का याद प्यार गुड मार्निंग।

डैरेशनः- बाप दादा कहे मधुबन सेमिनार में आने लिए तकर वा कोई छूटी आदि न लेवे। बाप दादा जब डैरेशन लिखे तब प्रोग्राम बनाना है। अच्छी विदाई।
*****

पाइन्टः- बच्चे गपोड़े तो मारते रहते है। काम जो करना है जिसे विहंग मार्ग की सर्विस हो। वह कहां। बाबा समझाते रहते हैं देहली को पकड़ो। जमीन लो। तुम एक भी पैसा न देना। आपे हीं हुन्डी भरते आवेंगे। तुमको मालूम है साधु वासवानी एक मटका रख देता था, मनुष्य आपे ही जाकर उसमें पैसा डालते थे। तुम भी तिजोरी रख देना। देखना मकान के लिए कैसे भर जाते हैं। एकदम भर जावेंगे। बाबा कहते हैं मकान बनना है तो जरूर बनेगा। बुधिवानों की बुधि में हूं ना। सिर्फ काम करने वाला चाहिए। अच्छा ओम।